मलागा, दक्षिणी स्पेन
अप्रील ११, २००६

सन्देश संख्या १६७

संगीतमय संदेशों से प्रज्ञा–ऊर्जा का विस्फोट

कुछ समय पूर्व इंग्लैण्ड–रिट्रीट के दौरान सम्पन्न हुए बड़े–यज्ञ–अनुष्ठान के समय यह निश्चय किया गया कि एक नौ सदस्यीय समिति सन्देशों को कविता के रूप बदलने का काम करेगी, उन्हें गीत के रूप में धुन देगी तथा पूरे विश्व में संगीत–कार्यक्रमों का आयोजन कर उनका प्रसार करेगी । इस पृथ्वी पर यह सर्वव्यापी चैतन्य की एक लीला ही होगी और उसके लिए शायद वह शिवेन्दु द्वारा समझदारी की ऊर्जा का स्पर्श पा चुके क्रियावानों के शरीर का उपयोग करेगा ।

वैलेनशिया (स्पेन) के पहाड़ों पर अभी–अभी, १ से ३ मई २००६ को सम्पन्न हुए लघु रिट्रीट में, वहाँ के संयुक्त संयोजक ने गीत एवं संगीत के माध्यम से समझदारी के आनन्द के प्रसार हेतु एक 'क्रिया म्यूजिकल बैण्ड' बनाने का निश्चय किया है । वह स्वयं कृष्ण की तरह एक बाँसुरी–वादक हैं । इस कार्य में स्वेच्छा से लगने वाले भक्तों का नाम अभिलेख (रिकार्ड) के लिए तथा विश्व के समस्त क्रियावानों से सूचनार्थ नीचे दिया जा रहा है । उन पर चैतन्य का आशीर्वाद हमेशा बना रहे ।

इंग्लैण्ड – जेरोम, निकोलस, इन्ग्रीड, त्यागी, मारिया, प्रेमा, जॉन और दो मार्क ।

स्पेन – जेवियर अरासा (बैण्ड पार्टी में और लोग भी साथ देंगे) ।

अब हमलोग देखेंगे कि इस कार्य को आरम्भ करने के लिए प्रेमा क्या लिखता है :–

''सन्देशों को गीत में बदलने के कार्य में अवसर पाकर यह शरीर हार्दिक धन्यवाद देना चाहता है । प्रेमा ने सन्देश संख्या ६८ से शुरू किया है । क्योंकि वह उसे प्रिय है । उसका छन्द एवं धुन भी बन चुकी है । जैसा कि यज्ञ के समय विचार–विमर्श हुआ था, प्रेरणा मिलने पर यह शरीर त्यागी के साथ मिलकर काम करेगा । यह स्वतः घटित हो रहा है और यह शरीर गीत लिखने और गाने के प्रति गहरे झुकाव को देख रहा है । कौन जानता है – शायद नए गुण प्रकट हो रहे हों ।''

जिस तरह एक पंख हवा के साथ अनजान यात्रा में बहुत दूर तक उड़ता चला जाता है, यह शरीर भी इस सृजनात्मक हवा के झोंके के साथ बह गया है, उसका गीत बहुत स्पष्ट है फिर भी बहुत सूक्ष्म है, उसकी धुन जीवन की धुन है जो उन्मुक्त है और मनोहर है ।

किसी ने इस शरीर से कहा कि यह बात समझ में नहीं आती है कि क्यों नहीं हमलोग गीत लिखने में मन्त्रों एवं भजनों का उपयोग करते हैं, तब इस शरीर से तत्क्षण यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि ''यहाँ हमलोगों की रुचि दोहराने या नकल करने में नहीं है । वेबसाइट के सन्देशों को आत्मसात करने से समझदारी की जो गहन ऊर्जा उत्पन्न होगी, उसी से यह गीत लिखना सम्भव होगा । इस प्रक्रिया में यदि मन्त्र की भी आवश्यकता हो तो निस्सन्देह उसे लिया जाएगा ।'' यदि गीत लिखने में स्मृति का उपयोग किया जाता है तब, वह गीत अज्ञेय की अभिव्यक्ति कैसे हो सकता है? तब जो गीत लिखा जाएगा वह शव–यात्रा का गीत होगा न कि उत्सव–गीत । यह मन–मुक्त सृजनात्मक प्रक्रिया होगी किन्तु विभाजित मन इसे समझ नहीं सकता । विभेदकारी 'मैं' सोचता है : दूसरे जो मन्त्र और भजन गाते हैं, वे कितने सफल हुए हैं; उनलोगों ने पैसा और यश, दोनों कमाया है, अतः क्यों नहीं उसी रास्ते पर चला जाय जिस पर वे गए है? किन्तु वह बीते समय का मार्ग है जो आवृत्तियों एवं अपेक्षाओं से संकीर्ण हो गया है । वह सड़क जहाँ जाती है, वहाँ अंधेरा है और द्वन्द्व है । जो द्वन्द्वपूर्ण तथा द्वैत पूर्ण है, उसका अनुकरण स्वतःस्फूर्त सृजनात्मक प्रक्रिया कैसे कर सकती है? सत्य यह है कि अनुकरण योग्य कोई मार्ग नहीं होता और आश्रय लेने हेतु भूतकाल नहीं होता, ठीक उसी तरह जैसे विचार करने के लिए भविष्यत काल नहीं होता । गीत–रचना अभी वर्तमान में ही सम्भव है । नाम और धन कमाने के लोभ का सृजनात्मक–प्रक्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं । हाँ, इस सृजनात्मकता के परिणामस्वरूप यश और धन दोनों मिल सकता है क्योंकि जीवन स्वयं असीम है।

क्वांटम मेकानिक्स का मूल भूत नियम अर्थात् 'सुपर पोजिशन सिद्धान्त' और मनुष्य की सहजावस्था (अर्थात् निर्मनावस्था या विकल्प रहित सजगता) में अदभुत समानता है । अतः हमलोग मन से अर्थात् 'अहंबोध' की भ्रान्ति से मुक्त हो जायें ।

क्या अन्तर्जगत में द्रष्टा और दृश्य के मध्य अद्वैत की अवस्था में दर्शन हो सकता है? हमलोग इस प्रश्न के साथ बने रहें । और कौन जानता है कि प्रश्न और प्रश्नकर्त्ता दोनों का लय हो जाय और भगवत्ता का उदय हो जाय ।

।। अद्वैत की जय हो ।।